जबलपुर (भारत)
अगस्त १२, २००१

सन्देश संख्या ४०

भक्त और योगी का अभिप्राय

विभक्त का मतलब है विभाजित, यानी कि टुकड़ों में बँटा हुआ। इसलिए भक्त का वास्तविक अर्थ है वह जो विभक्त नहीं है, पूर्ण है। भक्त वह नहीं है, जो अपने मस्तिष्क और नासिका पर विशेष चिन्ह धारण कर नाना प्रकार के आकर्षक काल्पनिक धारणाओं, भावनाओं और भावुकताओं में लिप्त रहकर 'भक्त' होने का स्वाँग रचता है। भक्ति का अर्थ है पूर्ण चैतन्य जिसमें अहंकार यानी कि खण्ड चैतन्य का विलय हो जाता है। इस अवस्था में मनुष्य केवल दैनिक कार्यों के सम्पादन हेतु आवश्यकतानुसार क्रियाशील होता है। इसलिए भक्ति समर्पण, समझ और सह अनुभूति का गुणात्मक समन्वय है।

वियोगी का तात्पर्य है – विघटन, असामंजस्य। इसलिए योगी का अभिप्राय हुआ – एकीकरण, सामंजस्य में होना। इस स्वामी या उस आनन्द, इस हंस या उस महाराज, इस गिरि या उस सिद्ध, इस वेशभूषा या उस केश–विन्यास के छद्म आवरण से युक्त व्यक्ति योगी नहीं है। इसलिए योग समन्वय (पूर्ण एकीकरण) और समाधि (साम्यावस्था) अर्थात् चाहने पाने की समस्या से मुक्त समाधान (शाश्वत संतुष्टि) की अवस्था है। भक्त और योगी एक ही हैं। नारद और पतंजलि में कोई भेद नहीं है। नरसी मेहता और लाहिड़ी महाशय एक हैं। गौरांग और गौड़पाद एक हैं। रामकृष्ण और रमण महर्षि एक हैं। आनन्दमयी और अरविन्द एक हैं। इसके बावजूद आध्यात्मिक मण्डी के ठग और व्याख्याता इन्हें एक दूसरे से भिन्न दिखलाते हुए महिमामण्डित करते हैं।

अस्तित्व बनावटीपन नहीं है। पूर्णता का आशय अतीत का बँधन नहीं है। उत्कृता अहम् भाव नहीं है। दृढता का मतलब भविष्य के प्रति निश्चिन्त रहना है। विनम्रता ही समझदारी है। जिसमें भी संकुचन होता है, उसमें पहले फैलाव आवश्यक है। जिसे गिराया जाता है उसका पहले उठा होना आवश्यक है। क्रिया न तो फैलती है और न ही उठाती है। क्रिया चुपचाप बिना किसी दावे के अपना उद्देश्य पूरा करती है। यह बहुतों को पोषण देती है, परन्तु उनका प्रभु नहीं बनती। यह महानता प्रदर्शित नहीं करती है और इसलिए वास्तव में महान् है। क्रियायोग विश्रान्ति, शान्ति और आनन्द की निधि है।

क्रिया का प्रत्यक्षबोध हृदय की महागुहा में होता है। संगीत एवम् उत्तम भोजन अन्ततोगत्वा निःशेष हो जाते हैं। चूँकि क्रिया कोई विषयवस्तु नहीं है अतः यह अक्षुण्ण ऊर्जा है। जल स्वयं कोमल एवं तरल है परन्तु ठोस एवं कठोर चीजों पर प्रहार करने के लिए इससे बेहतर पदार्थ दूसरा कोई नहीं है। दुर्बल सबल को जीत सकता है। सुनम्य अनम्य को जीत सकता है। क्रियायोगी इसी का अभ्यास करता है।

अनम्य और हठी व्यक्ति मन एवं मृत्यु के अनुयायी हैं। सौम्य और सुनम्य व्यक्ति निर्मन एवं जीवन के अनुयायी हैं। क्रियायोगी के शब्द कदाचित् मधुर एवं मनभावक नहीं होते किन्तु सत्य होते हैं। मधुर वचन दुर्भाग्य से प्रायः सत्य नहीं होते। उत्तम पुरूष तर्क–वितर्क में नहीं उलझते। जो इसमें उलझते हैं वे उत्तम पुरूष नहीं हैं। जो मानते हैं वह जानते नहीं। जो जानता है वह सदैव उन्मुक्त रहता है। सहज कर्म करें। दान ही सम्पन्नता का प्रतीक है। दूसरों को खुले हाथ से दें और इस प्रकार स्वयं श्री–युक्त बने रहें।

क्रियायोगी एक अच्छा सैनिक है परन्तु हिंसक नहीं है। वह एक अच्छा योद्धा है लेकिन क्रुद्ध नहीं है। एक अच्छा विजेता है किन्तु प्रतिशोधी नहीं है। वह सद्गुणसम्पन्न है और इसलिए चाहने पाने के चक्कर से मुक्त है। उसका विभुत्व से तादात्म्य रहता है। अपनी अज्ञानता को जानना ही बल है। ज्ञान की उपेक्षा ही व्याधि है। क्रियायोगी रोगी नहीं हैं क्योंकि वह रोग से ऊब कर इससे छुटकारा के मार्ग पर चल चुका है। क्रिया आब (जल) है शराब नहीं। जल ज्योति एवं जीवन है। शराब अन्धकार एवं मृत्यु है।

हैं मुझे जानने वाले बहुत कम,
निन्दा करने वाले कहीं अधिक।
वेशभूषा मेरा साधारण
किन्तु, हृदय में करता मैं
अद्भुत रत्न धारण।

ॐ हृदय ॐ